पाठ - 12

इसे जगाओ

कवि - भवानी प्रसाद मिश्र

प्रस्तावना

सपना वह नहीं होता जो नींद में आए, बल्कि वह होता है, जिसे पूरा किए बिना नींद न आए। अब आप ही तय कीजिए कि सपना पूरा करने के लिए आप नींद में पड़े रहना पसंद करेंगे या जागकर, सजग होकर, सतर्क होकर सपने को पूरा करेंगे? यह भी सोचिए कि क्या बिना जागे कोई काम पूरा हो सकेगा? यदि नहीं, तो फिर आलस्य क्यों? नींद क्यों, तंद्रा क्यों? क्यों न जागे और सजग होकर इस कविता का आनन्द लें।

भई सूरज
ज़रा इस आदमी को जगाओ
भई, पवन
ज़रा इस आदमी को हिलाओ,
यह आदमी जो **सोया** पड़ा है
जो सच से बेखबर
सपनों में खोया पड़ा है
भई, पंछी
इसके कानों पर चिल्लाओ!
भई सूरज! ज़रा इस आदमी को जगाओ 1
वक़्त पर जगाओ
नहीं तो जब बेवक्त जागेगा यह
तो जो आगे निकल गए हैं

उन्हें पाने
घबरा के भागेगा यह।
घबरा के भागना अलग है
क्षिप्र गति अलग है
क्षिप्र तो वह है
जो सही क्षण में सजग हैं
सूरज इसे जगाओ,
पवन इसे हिलाओ,
पंछी इसके कानों पर चिल्लाओ

व्याख्या

भई सूरज ..... आदमी को जगाओ।

संदर्भ : प्रस्तुत **पंक्तियाँ** हमारी पाठ्यपुस्तक के पाठ 'इसे जगाओ' से ली गई हैं, जिसके कवि भवानी प्रसाद मिश्र हैं।

प्रसंग : प्रस्तुत पंक्तियों में कवि सोए हुए आदमी को जगाने की प्रार्थना कर रहा है।

व्याख्या - इन पंक्तियों में सूरज, हवा और पक्षी इन तीनों को सम्बोधित किया गया है। संबोधन का तरीका बड़ा ही आत्मीय है, जैसे हम घर के भीतर ही परिवार के किसी सदस्य से बात कर रहे हों, भई, सूरज, भई पवन आप जानते हैं कि सूरज जिंदगी देने वाला है, वह हमें प्रकाश तो देता हो है, ऊष्मा भी देता है, जो इस संसार को प्राणवान बनाए रखने के लिए अनिवार्य है। सूरज के निकलने पर ही मनुष्य और पशु–पक्षी जागते हैं और रोज़मर्रा के कामों में जुट जाते **हैं**। जीवन को **सुचारु** रूप से चलाने के लिए प्रकृति का दूसरा अति आवश्यक तत्व है–हवा, हवा लगातार कभी तेज, कभी हल्की और कभी बहुत हल्की चलती रहती है। इस कविता में सोया हुआ आदमी है, मगर यह जो सोया हुआ आदमी है वह नींद में सोया हुआ नहीं है, बल्कि जैसे सोने वाला आदमी आसपास के वातावरण से बेखबर रहता है। उसी अर्थ

में **जो** सोया हआ है, उसके इर्दगिर्द की दुनिया में क्या घटित हो रहा है, इससे वह अनजान है।

विशेष :इसकी भाषा सरल एवं सुबोध है और पढ़ने में रुचिपूर्ण है ।

जगाना, हिलाना और चिल्लाना सोए हुए व्यक्ति को जगाने के तरीके हैं तथा इसके लिए क्रमशः सूर्य, वायु और पक्षी से अनुरोध करना, कविता के सौन्दर्य को बढ़ाता है।

(2) वक्त पर जगाओ ..... कानों पर चिल्लाओ

संदर्भ प्रस्तुत **पंक्तियाँ** हमारी पाठ्यपुस्तक के पाठ 'इसे जगाओ' से ली गई हैं, जिसके कवि भवानी प्रसाद मिश्र हैं।

प्रसंग इस कविता में कवि सपने में खाए हुए आदमी को जगाने का **आह्वान** कर रहा है।

व्याख्या-कवि ने सूर्य, पवन और पक्षी का **आह्वान** किया है कि वे सच से बेखबर सोए और सपनों की दुनिया में खोए हुए आदमी को **जगाएँ**। इसी क्रम में कवि आगे कहता है कि इसे केवल जगाओ भर नहीं बल्कि समय पर जगाओ। अगर यह समय पर नहीं जागा तो इसके साथ के लोग आगे निकल जाएंगे अर्थात् दूसरे लोग तरक्की कर जाएंगे और यह पिछड़ जाएगा। आदमी सचेत न हो तो वह हड़बड़ाने लगता है। कवि इसी बात को स्पष्ट करते हुए कहता है कि घबराकर भागने और क्षिप्रगति से चलने में फर्क होता है। जो सही गति का भरपूर उपयोग करते हैं वे ही प्रगति करते हैं और जो सही अवसर पर चूक जाते हैं वे प्रगति नहीं कर पाते। समय के सच को पहचानने वाला व्यक्ति ही सच से परिचित होता है और अपने अन्दर जागृति पैदा कर सकता है।

विशेष - इसकी भाषा सरल एवं सुबोध है और पढ़ने में रुचिपूर्ण है ।

इस कविता में कवि सपने में खाए हुए आदमी को जगाने का **आह्वान** कर रहा है।

सारांश

इस कविता में भवानी प्रसाद मिश्र ने प्रकृति के उन उपादानों से व्यक्ति के अन्दर जागृति का भाव पैदा करने का आग्रह किया है जो सृष्टि के आरम्भ से स्वयं क्रियाशील हैं। सूरज रोज उगता है और डूबता है। वह संसार को जीवन ऊर्जा प्रदान करता है और प्रकाश देता है। जीवन की समस्त हलचल का वह **स्रोत** है। हवा निरन्तर चलती रहती है। वह भी संसार को जीवन प्रदान करती है। पक्षियों का कलरव प्रातःकाल से ही जीवन के गीत सुनाता है। कवि ने प्रगति का अर्थ भी बहुत सुन्दर ढंग से व्यक्त किया है। प्रगति हड़बड़ाहट में भागने से नहीं होती, बल्कि विचारपूर्वक स्थितियों को समझकर उनका आंकलन करते हुए सही दिशा में प्रयास करने से होती है। इसके लिए आदमी को निरन्तर सजग और सक्रिय रहने की आवश्यकता है।

जीवन परिचय

भवानी प्रसाद मिश्र

जन्म : भवानी प्रसाद मिश्र का जन्म 1914 में हुआ था।

शिक्षा : भवानी प्रसाद मिश्र की शिक्षा उनके पैतृक गांव में ही हुई थी। बाद में वह इलाहाबाद आ गए थे।

रचनाए गीत–फरोश, बुनी हुई रस्सी, त्रिकाल संध्या चकित है दुख, खुशबू के शिलालेख कालजयी, सतपुड़ा के घने जंगल।

साहित्य में स्थान

भवानी प्रसाद मिश्र की कविता सहज, सरल और बोलचाल की भाषा में रहती है। इन्होंने 'कल्पना' नामक पत्रिका में संपादन का कार्य भी किया है।

मृत्यु : भवानी प्रसाद मिश्र की मृत्यु 1985 में हुई थी।